आजाद रहिये
विचारों से
लेकिन बंधे रहिये
संस्कारों से।
– अज्ञात

आगे स्थिति और भयावह

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने चेतावनी दी है कि आगे स्थिति और भयावह होने वाली है। अमेरिका में दो लाख से ज्यादा लोग संक्रमित हैं और 5,000 से ज्यादा की मौत हो चुकी है। जर्मनी की हालत भी खराब ही कही जाएगी लेकिन वहां मृत्यु दर काफी कम है।

ममता शर्मा।

दुनिया भर में कोरोना वायरस से संक्रमण के दस लाख से ज्यादा मामले दर्ज किए गए हैं और 53 हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। यह हाल तब है जब बीमारी अपने चढ़ाव पर है। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने चेतावनी दी है कि आगे स्थिति और भयावह होने वाली है। अमेरिका में दो लाख से ज्यादा लोग संक्रमित हैं और 5,000 से ज्यादा की मौत हो चुकी है। जर्मनी की हालत भी खराब ही कही जाएगी लेकिन वहां मृत्यु दर काफी कम है। शुक्रवार की सुबह वहां कुल 84,794 मामले दर्ज थे जबकि मौतें 1,107 ही हुई थीं।

पड़ोस के इटली में कुल मामले 115,242 (डेढ़ गुने से कम) हैं, जबकि मौतें 13,915 (दस गुनी से ज्यादा) हुई हैं। आंकड़ों से जाहिर है कि लोगों की जान बचाने में जर्मनी बाकियों से कहीं बेहतर है। इसकी वजह वहां व्यापक टेस्टिंग और संक्रमित पाए गए लोगों को सख्ती के साथ समाज से अलग कर देना बताई जा रही है। भारत इस बीमारी से अपने तरीके से लड़ रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हमारी कोशिशों की तारीफ की है। कोविड–19 को लेकर उसके विशेष प्रतिनिधि डॉ. डेविड नवारो ने यहां लॉकडाउन को सही समय पर उठाया गया कदम बताते हुए कहा कि अमेरिका और ज्यादातर यूरोपीय देशों की सरकारें काफी समय तक टालमटोल करती रहीं लेकिन भारत में इस पर तेजी से काम हुआ। बहरहाल, इस तारीफ से संतुष्ट होने की कोई गुंजाइश हमारे सामने नहीं है। हमारे डॉक्टरों, नर्सों और बाकी मेडिकल

स्टाफ के पास सुरक्षा के जरूरी उपकरण नहीं हैं। उन्हें अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में काम करना पड़ रहा है। कहीं मकान मालिक उन्हें घर से निकाल रहे हैं तो कहीं जांच को लेकर उन पर हमले हो रहे हैं। यही नहीं, जब वे अपने लिए सुरक्षा उपकरणों और अन्य सुविधाओं की मांग करते हैं तो प्रशासन की ओर से उन्हें कार्रवाई की धमकी मिलती है।

याद रहे, कोरोना से लड़ने वाले असली योद्धा वे ही हैं। इस महामारी से हमारी लड़ाई का अंतिम नतीजा उनके मनोबल और कौशल से ही निकलेगा। लॉकडाउन से हमने बीमारी फैलने की रफ्तार घटा दी है लेकिन बात सिर्फ इसी से नहीं बनने वाली। हमें और तरीके भी अपनाने होंगे। टेस्टिंग में जर्मनी की बराबरी करना हमारे लिए कठिन है लेकिन देर–सबेर रास्ता वही पकड़ना होगा। बाकी देशों में जहां सिर्फ कोरोना के लक्षण वाले लोगों का टेस्ट किया जा रहा है, वहीं जर्मनी में हर किसी का टेस्ट हो रहा है।

भारत में टेस्ट का हाल यह है कि यहां प्रति करोड़ आबादी पर सिर्फ 56 लोगों का टेस्ट हुआ है, जो दुनिया में सबसे कम है। ऐसे में डर इस बात का है कि हमारी 130 करोड़ आबादी में कुछ हजार लोग लॉकडाउन में रहते हुए भी अनजाने में वायरस न फैला रहे हों।

सबसे ज्यादा पलायन

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

बेशक आज हालात तीन दशक पहले वाले न हों, लेकिन वे इतने बेहतर भी नहीं है। आज भी महज अपना पेट पालने के लिए देश में सबसे ज्यादा पलायन इन्हीं राज्यों से हो रहा है। किताबों में भारत को गांवों का देश बताना अच्छा लगता है लेकिन इसके पीछे गांवों से रत्ती भर लगाव भी होता तो नीति निर्माण के केंद्र में गांव और गरीब को होना चाहिए था। दुर्भाग्यवश ऐसा कम ही हुआ। भारतीय नौकरशाही में समाजवादी शैक्षिक पृष्ठभूमि का वर्चस्व तो है, लेकिन नीति निर्माण के केंद्र में यह सोच कम ही नजर आती है। कहा जाता है कि हमारी नौकरशाही में देश की बेहतरीन प्रतिभाएं शामिल हैं। लेकिन उसका अतीत संकट को भांपने में अक्सर चूक जाने का ही रहा है। इस लिहाज से माना जा सकता है कि उसकी सोच और प्रशिक्षण में कोई बड़ी कमी है।

संपादकीय

अपने दायित्व निभाएं

भारत में कुछ लोग इस्लाम को बदनाम करने की साजिश रच रहे हैं। उसमें तबलीगी और दूसरे मौलवी शामिल हैं। देश भर में तब्लीगी जमात के संपर्क में आए 9000 हजार लोगों को क्वारंटीन में रखा गया है जबकि 400 लोगों को संक्रमण पाया गया है। अब इससे बड़ी शर्म की बात क्या हो सकती है। तबलीगी जमात इस्लाम की आड़ में भारत के खिलाफ बड़ी साजिश रचने में कामयाब हुआ है। जब पूरी दुनिया में कोरोना वायरस का संक्रमण फैला है, उस स्थिति में सबकुछ जानते हुए भी दिल्ली में हजारों लोग मरकज में कैसे जमा हुए। इसके लिए कौन गुनाहगार है। सरकारें भी अपनी जिम्मेदारी और जबाबदेही से नहीं बच सकती है। सरकार का खुफिया विभाग भी फेल रहा है। ऐसी स्थिति में इतनी भारी तादात में विदेशी कैसे पहुंच गए। उससे भी बड़ी बात यह है कि लाक डाउन के बाद भी 960 विदेशी पूरे भारत भर में टूरिस्ट वीजा की आड़ में फैल गए। 22 राज्यों के लोग इस जमात में शामिल हुए थे। आज हालात यह है कि तबलीगी जमात ने भारत को कोरोना हब बनाने की साजिश रची है। इतनी भारी संख्या में विदेशी भारत के बड़े और छोड़े शहरों में फैल गए लेकिन हमारी सरकारों और खुफिया को भनक तक नहीं लगी। इसके अलावा धर्म की आड़ में हजारों की भीड़ मस्जिदों में इकट्ठा कर कोरोना का वायरस खैरात में बांटा। निश्चित रुप से कहीं न कहीं से यह हमारी व्यवस्थागत नाकामी रही है। निकाल सकते हैं। इस वक्त देश के साथ खड़े होने का है। हमें टिप्पणी या आलोचना के बजाय सरकार का साथ दें और कोरोना की जंग में एक सच्चे राष्टवादी की तरह अपने दायित्व निभाएं।

लेकिन चुनौती तो तब बन गई है जब लाक डाउन के बाद भी वायरस का संक्रमण नहीं थम रहा है। दुनिया भर के 200 से अधिक देश इस महामारी की जद में हैं।

साजिश के खिलाफ उठाए कदम!

प्रभुनाथ शुक्ल।

भारत इस वक्त मुश्किल दौर से गुजर रहा है। कोरोना वायरस का बढ़ता संक्रमण इंसानी अस्तित्व पर सवाल खड़ा कर दिया है। भारत इस लड़ाई को बेहद मुस्तैदी से लड़ रहा है। सरकार की तरफ से उठाए गए कदम की विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सराहना की है। प्रधानमंत्री मोदी अब तक तीन बार देश की जनता के नाम संदेश प्रसारित कर चुके हैं। पीएम देश के डाक्टरों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों, राज्यों के मुख्यमंत्रियों से कोरोना से लड़ने की तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं और आवश्यक सलाह भी दे रहे हैं। लेकिन चुनौती तो तब बन गई है जब लाक डाउन के बाद भी वायरस का संक्रमण नहीं थम रहा है। दुनिया भर के 200 से अधिक देश इस महामारी की जद में हैं।

दुनिया भर में 10 लाख से अधिक लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हैं। अब तक 53 हजार से अधिक मौत हो चुकी है। भारत में 2300 से अधिक संक्रमित हो चुके हैं। 56 से अधिक मौतें हो चुकी हैं। 252 कोरोना संक्रमित डिविजन उभरे हैं। कोराना संक्रमण से बचाने उतरे 52 डाक्टरों और मेडिकल स्टाप को भी संक्रमण हो चुका है। इसके बाद भी कुछ लोगों की वजह से देश में मरीजों की संख्या लगातार बढ़ी है।

तबलीगी जमात की हरकतों से पूरा देश शर्मसार है। सरकार के सामाने ऐसे राष्ट्र विरोधी तालिबानी सोच के लोग चुनौती बने हैं। सरकार एक नहीं कई मार्चों पर युद्ध लड़ रही है। यह वक्त राजनीति का नहीं है। हमें धर्म, संप्रदाय, भाषा, नस्ल से आगे निकल कर देश के लिए सोचना होगा। जब जीवन बचेगा तो सभ्यताएं और संस्कृतियां बचेंगी। यह देश सभी धर्मों और संप्रदायों का है, फिर इसे हिंदू और मुसलमान के चश्में से देखना कितनी बड़ी साजिश है। तबलीगी जमात की करतूतों से पूरा देश शर्मसार है।

भारत के लिए कोरोना वायरस से लड़ना आसान नहीं है। लेकिन सरकार इसे चुनौती मान कर हर प्रयास कर रही है। राज्य सरकारें भी बहुमूल्य जीवन बचाने के लिए पूरी तरह प्रयास रत हैं। मेडिकल स्टाप, पुलिस, साहित्यकार, संगीतकार, अभिनेता, राजनेता और मीडिया सभी एक साथ हैं। यह आलोचना का समय नहीं हैं एक जुटता का है। दिन रात स्वयंसेवियों की फौज भूखे लोगों को भोजन उपलब्ध करा रही है। जीवन बचाने के लिए सघर्ष चल रहा है। कोरोना से प्रभावित चीन में भारतीय लोग सोशलमीडिया पर चीन सरकार के अनुभवों को साझा कर रहे हैं। लोगों को इस वायरस से बचने की सलाह दे रहे हैं। भारत की जनता से अपील भी कर रहे हैं कि आप सरकार के साथ खड़े हों और उसके दिशा निर्देशों का पालन करें। लाक डाउन की वजह से पूरा देश ठहरा है।

फैक्टियों में उत्पादन बंद हैं। कामगार पलायन कर रहे हैं। लोग घरों में कैंद हैं। देश को बड़ी आर्थिक क्षति उठानी पड़ी है। हजारों अरब डालर का प्रतिदिन का नुसान हो रहा है। शेयर बाजार हर रोज डूब रहा है। विश्व बैंक ने कोरोना की लड़ाई जीतने के लिए भारत सरकार को बड़ी राहत देने की घोषणा की है। हजारों की संख्या में दानवीर प्रधानमंत्री केयर फंड में दान कर रहे हैं। लेकिन हमारे बीच के लोग ही सराकर के साथ हिंदू–मुस्लिम का धिनौना खेल खेल रहे हैं। नमाज अदा करने के बहाने इस्लाम को बदनाम किया जा रहा है। इस लड़ाई को देखे हुए सभी हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसायिसों से संबंधित धर्म स्थलों पर ताला लटका है। उस स्थिति में दिल्ली के निजामुद्दीन के मरकज में तबलीगी जमात की हरकत शर्मसार करने वाली है।

अष्टयोग-5008

5		1		6		2
4	25	2	32		36	
			6	7		3
	31	3	42		33	
3	2	7		4	5	
	37		35	3	30	
2		6		1		4

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5007 का हल

5	3	6	4	1	7	2
4	33	2	32	2	28	7
1	5	7	6	4	2	3
6	33	5	42	3	31	6
3	2	4	6	7	5	1
7	27	3	35	5	40	5
2	5	1	3	6	7	4

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

काश! कोविड–19 के पूर्वज को पकड़ पाते

मोहन। फिर कोरोना वायरस कोविड–19 कहां से आया है? फरवरी 2020 में अमेरिकी समाज विज्ञानी स्टीवन मोशर का लेख 'न्यूयॉर्क पोस्ट' में प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने यह संदेह जताया कि कोविड–19 वायरस को वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलोजी की किसी लैब में बनाया गया है, जहां से वह असावधानीवश लीक हुआ है। जनवरी 2020, में चीनी वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस का जीनोम सीक्वन्स किया और फरांस समेत अन्य देशों में भी यह हुआ। 17 मार्च 2020 को 'नेचर मेडिसिन' जर्नल में स्क्रिप्स इंस्टीट्यूट, कैलिफोर्निया की वैज्ञानिक क्रिस्टिन एंडरसन व उनके सहयोगियों के शोधपत्र ने कोरोना वायरस से जुड़ी अफवाहों को मय सबूत तार्किक तरीके से खघरिज करते हुए यह स्पष्ट किया है कि कोरोना वायरस किसी लैब में नहीं बना है, और किसी जैविक वार–फेयर के प्रॉजेक्ट की उपज नहीं है। इस प्रोटीन में हुए मामूली बदलाव (चार अमीनो ऐसिड) से यह संभव हुआ है।